International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 3 Ser. 1 || March 2019 || PP 88-93

राजस्थान के पर्यटन के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामः

डॉ. श्रीफूल मीना
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास
राजकीय कला महाविद्यालय
दौसा राजस्थान

सुशीला सांवरिया
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास
राजकीय कला महाविद्यालय
दौसा राजस्थान

औद्योगिक दृष्टिकोण से पर्यटन विश्व का एक विकसित उद्योग है। वर्तमान समाज पर्यटन से अनेक प्रकार के सामाजिक एवं आर्थिक लाभ प्राप्त कर रहा है। इस लाभ को देखते हुए पर्यटन के अधिकाधिक विकास हेतु विभिन्न देशों की सरकारें लगातार प्रयत्नशील है तथा नवीनतम उपलब्धियों के लिए नित नूतन पक्षों पर अनुसंधान जारी है। यद्यपि यह कहा जाता है कि भारत में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन मात्र विगत तीन शताब्दी से ही व्यापक रूप से चल रहा है। यहाँ आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। यदि कोरोना काल (वर्ष 2020 व 2021) को छोड़ दें तो यहां प्रतिवर्ष पर्यटकों की सख्या में वृद्धि होती जा रही है। आगामी पचंवर्षीय योजना में इस बात की संभावना व्यक्त की जा रही है कि आधुनिकतम सुविधाओं एवं आकर्षण की वजह से भारतीय पर्यटन में अभूतपूर्व वृद्धि होगी।

विष्व के सबसे तेज बढ़ने वाले पर्यटन उद्योग से सभी स्तरों पर पड़ने वाले प्रभाव लाभकारी है। जैसे–जैसे पर्यटन उद्योग की वैष्विक पहचान बनी है वैसे–वैसे इसके विभिन्न आयाम एवं प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग रूप में उभरकर सामने आने लगे हैं। कभी भ्रमण की लालसा के लिए कभी तीर्थाटन से मनोकामना पूर्ति के लिए या फिर व्यापार के लिए विदेष गमन तक का सफर तय करता पर्यटन अब जीवन का अंग सा बन गया है। बहुआयामी होते पर्यटन ने जिस तेजी से गति पकड़ी है, उसी तेजी से इसके प्रभाव लगभग सभी क्षेत्रों में पड़ें हैं। समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति, पर्यावरण, संस्कृति आदि पर कैसे पर्यटन अपने अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालता है, इसे जान और समझकर ही पर्यटन के बेहतर क्रियान्वयन को सही रूप में परिणत किया जा सकता है। चूंकि पर्यटन आज विश्व में विदेषी मुद्रा अर्जन का सबसे बड़ा उद्योग हो गया है, यह जरूरी है कि दूसरे उद्योगो के ही समान पर्यटन के प्रबंधन को भी बेहतर किया जाए। बेहतर प्रबंधन से ही इसके विभिन्न क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभावों का सही आकलन किया जा सकता है। इसी से पर्यटन गतिविधियों को सुनियोजित तरीके से क्रियान्वित किया जा सकता है।[1]

मानव के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास और उसके पर्यावरण का प्रभाव को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह ज्ञात होता है कि आदिमानव पर्यावरण के अन्य कारकों के समान एक कारणमात्र था, उसकी आवष्यकता कन्दमल, फल–फूल एवं जंगली जानवरों के षिकार तक सीमित थी। साथ ही मानव की पृथ्वी पर संख्या अत्यन्त सीमित थी। फलस्वरूप मानव द्वारा पर्यावरणीय आक्रमण नहीं के बराबर था। पर्यावरण पर दुष्प्रभाव नगण्य था और मानव तथा पर्यावरण का सम्बन्ध मधुर और मित्रवत रहा। मानव के विकास के रूप में पषुपालन एवं कृषि के प्रादुर्भाव ने प्राकृतिक साधनों के दोहन में वृद्धि की क्योंकि कृषि और पषुपालन के विस्तार के लिए वृक्षों की सफाई होने लगी। मानव प्रौद्योगिकी में विकास हुआ और "सांस्कृतिक पर्यावरण" का दायरा बढ़ने लगा। मानव की बढ़ती संख्या हेतु आवास के लिए भूमि, भोजन के लिए कृषि उत्पादन, अन्य सुविधाओं हेतु प्रकृति के साधनों पर भार बढ़ा। मानव ने अपने रहने के लिए मकानों, गांवों, कस्बों आदि का निर्माण किया। सामाजिक संस्थाओं, जैसे–विद्यालयों, पूजाघरों, (मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरूद्वारों) का निर्माण परिवहन हेतु सड़के, पुल, रेललाइन आदि का निर्माण तथा सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण किया गया। यद्यपि कि इस काल में मानव द्वारा किये गये कार्यों का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं हुए, परन्तु परिवर्तन अवष्य हुए। फिर भी पर्यावरण द्वारा स्वतः नियामक क्रियाविधि द्वारा सन्तुलन स्थापित होता रहा, जिससे गम्भीर पर्यावरणीय समस्याओं का जन्म नहीं हुआ।[2]

पर्यटन का उद्देश्य मनोरंजन, छुट्टी मनाना, स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करना, ज्ञानवर्द्धक धार्मिक उद्देश्य, खेलकूद, शैक्षणिक गतिविधियों आदि रूपों में ही नहीं होता वरन् पर्यटन से क्षेत्र विशेष के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश भी प्रभावित होता है प्रत्येक क्षेत्र के निवासियों की अपनी अलग–अलग सामाजिक, सांस्कृतिक रीति रिवाज, परम्पराओं, तीज–त्योंहार, रहन–सहन, लोकभाषा, लोककलाएं होती हैं। क्षेत्र विशेष की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासतों से समृद्ध क्षेत्र पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम होते हैं तथा क्षेत्र के आर्थिक विकास में सहायक होते हैं। इन्हीं सांस्कृतिक विशेषताओं के प्रति आकर्षित होकर पर्यटक उस क्षेत्र में पर्यटन हेतु जाता है। पर्यटक न केवल आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को प्रभावित करता है वर्न उससे प्रभावित भी होता है।

कलांतर में नवीन स्थलों की खोज और दूरस्थ प्राचीन स्थलों के संज्ञान की जिज्ञासा ने भी पर्यटन यात्राओं को प्रोत्साहित किया।[3] भारत अनेकता में एकता वाला देष है यहाँ अनेक धर्मों का उद्भव हुआ है जैसे हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि। हमारे देष की जलवायु में भी बहुत विभिन्नता है यहाँ उत्तर में बर्फ से आच्छादित विषाल हिमालय पर्वतमाला है वहीं दक्षिण में तीनों ओर लम्बा समुद्र तट हैं तथा राजस्थान के पष्चिम में विस्तृत रेगिस्तान है भारत की भूमि विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों की संगम स्थली है। कुल मिलाकर हम यह भी कह सकते है कि भारत पर्यटकों के लिये एक आदर्ष देष है तथा यहाँ पर्यटन उद्योग के विकास के लिये अच्छे अवसर हैं।

राजस्थान में भी प्राचीन काल से तीर्थाटन, देषाटन इत्यादि के रूप में भ्रमण की परम्परा रही है। यद्यपि उन यात्राओं को आधुनिक पर्यटन के शब्दषः पर्याय के रूप में व्यवहृत नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रकृति से कठिन वे यात्राएं यातायात तथा संचार के साधनों की अल्पता के कारण इतनी सुविधाजनक नहीं हती थीं तथा आराम एवं मनोरंज का उद्देष्य भी इनमें समाहित नहीं होता था।[4]

देश के पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान क्षेत्र भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का प्रमुख केन्द्र होने के साथ–साथ वीरता, शौर्य, त्याग, कला, लोकजीव और उत्कट देशभक्ति, भावनापूर्ण बलिदानों के फलस्वरूप विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां के प्राचीन शिलालेख, स्मारक, स्तम्भ, मन्दिर एवं भवन उसके समृद्धशाली तथा गौरवपूर्ण अतीत के परचियक हैं। यह क्षेत्र अपनी वीरता, चित्रकला, स्थापत्यकला, वेशभूषा, त्योंहार एवं मेलों, विभिन्न लघु एवं औद्योगिक इकाइयों जैसी नाना विशेषताओं के फलस्वरूप पर्यटन के क्षेत्र में विश्व के मानचित्र अंकित है।

राजस्थान की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन और भौगोलिक सम्पदा लिये हुए है जिसने प्राकृतिक भू–दृष्यों व आर्थिक भूदृष्यों को विकसित होने में सहयोग किया है। यहाँ पर अपार पुरातात्विक सम्पदा जिसमें महल, किले, हवेलियाँ, मन्दिरों के वास्तुषिल्प शौर्य एवं वीरता की गाथायें कला एवं संगीत की परम्पराएँ अत्यन्त समृद्ध है। यहां के प्राकृतिक वातावरण इसके प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाने में चार चाँद लगा दिये है।

पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा उद्योग है तथा विश्व की अर्थव्यवस्था में पर्यटन विपणन की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। पर्यटन सुविधाओं का विकास, पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधाएँ यात्रा अधिकारियों परिवहन परिचालकों को स्मारकों, साज–समान, व विदेशी, छवि का प्रसार, मानचित्र, पर्यटन साहित्य, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, व्यापार मेलों पर्यटन संगोष्ठियों आदि का आयोजन पर्यटन विपणन के अन्तर्गत आते है।[5]

पर्यटन विभिन्न क्षेत्रों में अपना अलग–अलग प्रभाव डालता है। पर्यटन आरम्भ से ही राष्ट्रों के मध्य सामाजिक आदान–प्रदान का महत्वपूर्ण साधन रहा है। पारम्परिक तौर पर पर्यटन को विलासिता माना जाता रहा है परन्तु बदले वैष्विक परिदृष्य में पर्यटन अपेक्षाकृत बड़े सामाजिक, सांस्कृति, धार्मिक परिप्रेक्ष्य में आता है और उसकी रुचियां भी अलग–अलग होती हैं। आज पर्यटन विलासिता नहीं रहकर आम व्यक्ति की पहुंच में है। यह सामान्य जीवन प्रक्रिया का हिस्सा माना जाने लगा है। पर्यटन स्थल पर पर्यटक नए सामाजिक जीवन के सम्पर्क में आता है, वह दूसरे से सीखना चाहता है। इस रूप में लोगों के बीच बेहतर समझदारी, उनके सामाजिक विकास के एक साधन के रूप में पर्यटन गहरा प्रभाव डालता है।[6]

पर्यटन से किसी देष में रहने वाले लोगों के जीवनस्तर तथा रहन–सहन की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लाए जाने के साथ ही रोजगार सृजन का भी महत्वपर्णू कार्य होता है। पर्यटन से स्थानीय कर प्राप्तियों के रूप में अर्थव्यवस्था को जो लोभ होता है उसमें सामाजिक रूप में निर्धनता उन्मूलन, षिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आवास पेयजल तथा स्वच्छता, बेहतर अवसंरचना, मनोरंजन के अधिक अवसरों आदि आधारभूत समाज सेवा की व्यवस्था को वास्तविका में साकार किया जा सकता है। यही नहीं सामाजिक, क्षेत्रीय, लिंगभेद की असमानताओं को दूर करने की दृष्टि से भी पर्यटन प्रभाव डालता है। पर्यटन से होने वाले लाभों को उन ग्रामीण क्षेत्रों में लगाया जा सकता है जहां अन्य आर्थिक क्रियाकलाप नहीं है। इसी प्रकार पर्यटन महिलाओं, युवाओं, समाज के कमजोर वर्गों, विकलांगों, जनजातीय समुदायों को रोजगार पर लगाने की अपार क्षमता है और इससे इन समुदायों को सषक्त बनाकर सामाजिक न्याय और समानता उपलब्ध करायी जा सकती है। वस्तुतः सामाजिक स्थिरता के लिए पर्यटन प्रत्यक्षतः सहायक है। समाज में पर्यटन का प्रभाव व्यक्ति के जीवन स्तर में वृद्धि, रोजगार पैदा करने, गांवों के विकास को बढ़ावा देने आदि के रूप में होता है तो दूसरी ओर पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव भी समाज में कम नहीं होते हैं। राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में तो पर्यटन का सामाजिक प्रभाव इस कदर आ रहा है कि यहां की जीवन शैली, संस्कृति, परम्पराओं आदि सभी में कुछ दषकों में जबरदस्त बदलाव आ गया है।

पर्यटन का सामाजिक महत्त्व

पर्यटक और पर्यटन–उद्योग का स्थानीय समाज और संस्कृति पर पड़ने वाला प्रभाव आज एक महत्त्वपूर्ण बहस की बात हो गई है। साधारणतः लोगों का विश्वास है कि पर्यटन से अन्तर्राष्ट्रीय समझ और सौहार्द बढ़ता है। पर्यटक अपने भ्रमण के मध्य देशी संस्कृति की एक झलक देखना चाहता है। अधिकांश समाजों में पर्यटकों का परम्परागत रूप में स्वागत किया जाता है उन्हें शादी एवं रीति–रिवाजों में शामिल होने का मौका दिया जाता है। अब पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है। तीसरी दुनिया के देश ''सांस्कृतिक प्रदर्शन'' करने लगे हैं जिसमें कोई आत्मियता और जीवान्तता नहीं होती है।

यह सही है कि पर्यटन के सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव को आसानी से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से अलग नहीं किया जा सकता। फिर भी पर्यटन का समाज में सीधा हस्तक्षेप होता है और उसकी भूमिका होती है– होटल, पर्यटन अधिसंरचना, शिल्प कला, दुकान और पर्यटक खुद।

पर्यटन सिर्फ हमारे जीवन में खुशियों के पल को वापस लाने में ही मदद नहीं करता है बल्कि यह किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन का महत्व और पर्यटन की लोकप्रियता को देखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1980 से 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस के तौर पर मनाने का निर्णय लिया। विश्व पर्यटन दिवस के लिए 27 सितम्बर का दिन चुना गया क्योंकि इसी दिन 1970 में विश्व पर्यटन संगठन का संविधान स्वीकार किया गया था। पर्यटन दिवस की खासयित यह है कि हर साल लोगों को विभिन्न तरीकों से जागरूक करने के लिए पर्यटन दिवस पर विभिन्न तरीके की थीम रखी जाती है।[7] इस साल इस दिवस की थीम रखी गई – 'टूरिज्म एण्ड वाटर प्रोटेक्टिंग आवर कॉन फ्यूचर'।

राजस्थान जैसे राज्यों के लिए पर्यटन का खास महत्व होता है। राजस्थान जैसे राज्य की पुरातात्विक विरासत या संस्कृति केवल दार्शनिक स्थल के लिए नहीं होती है, इसे राजस्व प्राप्ति काभी स्रोत माना जाता है और साथ ही पर्यटन क्षेत्रों से कई लोगों की रोजी–रोटी भी जुड़ी होती है। आज राजस्थान जैसे राज्यों को देखकर ही अन्य राज्यों के लगभग सभी पुरानी और ऐतिहासिक इमारतों और स्थलों को संरक्षण दिया जाने लगा है। राजस्थान असंख्य अनुभवों और मोहक स्थलों का राज्य है। चाहे भव्य स्मारक हों, प्राचीन मंदर या मकबरे हों, इसके चमकीलें रंगों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रौद्योगिकी में चलने वाले इसके वर्तमान से अटूट सम्बन्ध है। केरल, शिमला, गोवा, आगरा, मध्यप्रदेश, मथुरा, काशी जैसी जगहें तो अपने विदेशी पर्यटकों के लिए हमेशा चर्चा में रहती हैं। राजस्थान देसी लोगों साथ–साथ विदेशी पर्यटकों के लिए हमेशा चर्चा में रहता है। राजस्थान और इसके जिलों व उनके आस पास के क्षेत्रों में देशी–विदेशी लोग प्रतिवर्ष घूमने आते हैं। राजस्थान में पर्यटन की उपयुक्त क्षमता है। यहाँ सभी प्रकार के पर्यटकों को चाहे वे साहसित यात्रा पर हो, सांस्कृतिक यात्रा या वह तीर्थयात्रा करने आए हों या खुबसूरत रेतीले धोरों की यात्रा पर निकलें हो, सबके लिए यहाँ खुबसूरत स्थल हैं। राजस्थान व इसके जिलों में घूमने में तो महीना भी कम पड़ जाता है। एक समय ऐसा आया जब राजस्थान के पर्यटन स्थल खतरे में नजर आने लगे और लगने लगा कि शायद अब राजस्थान पर्यटक स्थल के नाम पर पर्यटकों की पहली पसंद नहीं रहेगा। दुनिया में आई आर्थिक मंदी और आतंकवाद के चलते ऐसा लगने लगा कि पर्यटक अब राजस्थान का रूख करना पसंद नहीं करेंगे, पर ऐसा नहीं हुआ। राजस्थान की सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता इतनी ज्यादा है कि पर्यटक ज्यादा समय तक यहाँ के सुंदर नजारे देखने से दूर नहीं रह सके। यही वजह है कि राजस्थान में विदेशी सैलानियों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न जिलों में अलग–अलग योजनाएँ भी लागू की गई हैं।

भारतीय पर्यटन विभाग ने सितम्बर 2002 में 'अतुल्य भारत' नाम से एक नया अभियान शुरू किया था। इस अभियान का उद्देश्य भारतीय पर्यटकों को वैश्विक मंच पर प्रमोट करना था जो काफी हद तक सफल हुआ। इसी तरह राजस्थान पर्यटन विकास निगम ने रेलगाड़ी की शाही सवारी कराने के माध्यम से लोगों को पर्यटन का लुत्फ उठाने का मौका दिया। जिसे पैलेस ऑन व्हील्स का नाम दिया गया। राजस्थान पर्यटन विकास निगम की यह पहल दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर भारत का नाम रोशन करने वाला माना गया।

राज्य की पर्यटन क्षमता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने वाला यह अपने किस्म का प्रथम प्रयास था। पर्यटन के क्षेत्र में विकास इसके पहले राज्य सरकार के अधीन हुआ करता था। राज्यों में समन्वय के स्तर पर भी बहुत थोड़े प्रयास दिखते थे। राज्य के द्वार विदेशी सैलानियों के लिए खोलने का काम यदि सही और सटीक विपणन ने किया तो हवाई अड्डों से पर्यटन स्थलों से सीधे जुड़ाव ने पर्यटन क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वर्तमान में सैलानी पर्यटन के लिहाज से सुदूर स्थलों की सैर भी आसानी से कर सके हैं। निजी क्षेत्रों की विमान कम्पनियों को राज्य में उड़ान भरने की इजाजत ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सिमटती दूरियों के बीच लोग बाहरी दुनिया के बारे में भी जानने के उत्सुक रहते हैं। यही कारण है कि आज दुनिया में टूरिज्म एक फलता–फूलता उद्योग बन चुका है। यह देखा गया है कि पर्यटकों के आगमन से भौतिक यथार्थ जैसे संगीत, नृत्य, कला, स्थापत्य आदि पर तो प्रभाव पड़ता ही है, पर सबसे गहरा प्रभाव अवधारणात्मक होता है। उनकी पूरी पहचान बदलने लगती है, उनकी खुद की देखने की दृष्टि में पवरिर्तन लगता है, वे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के सम्बन्धों, प्रकृति से सम्बन्धी स्थान विशेष से सम्बन्धों को देखने का एक नया नजरिया पा जाते हैं।[8]

साम्प्रदायिक आस्था व एकजुटता के प्रतीक ये मेले धीरे–धीरे अपनी नैसर्गिकता खोते जा रहे हैं। राज्य व्यापार, मेले, क्राफ्ट मेले, विदेशों में भारतीय उत्सवों के माध्यम से ग्रामीण कलाकारों, दस्तकारों व विशेषज्ञो को पर्यटन उद्योग के समीप लाया जा रहा है। फिर, राजस्थान ग्रामीण क्षेत्र इन दुर्लभ कलाकरों व गुरीजनों से रिक्त होते जा रहे हैं। इस प्रकार इन उत्सवों– मेलों के माध्यम से कलाओं की तस्करी तथा कलाकारों का निर्बाध प्रवाह नगरोन्मुखी हो रहा हैं। इन सब के बावजूद भी पर्यटन से सामाजिक–सांस्कृतिक लाभ भी काफी हो रहा है। इससे आपसी मेल व प्रेम में वृद्धि होती

है। विदेशी पर्यटक हमारे अतिथि होते हैं। विचारों, संस्कृति का आदान–प्रदान होता है,[9] विशेषकर तीर्थयात्री–पर्यटकों द्वारा।

राजस्थान सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर अपने आँचल में समेटे हुए हैं न केवल प्राकृतिक सौन्दर्य अपितु सांस्कृतिक रूप से भी ये क्षेत्र समृद्ध है। इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत इसे भारत के मानचित्र पर विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं। विविधताओं से परिपूर्ण यहाँ की संस्कृति रहस्य, रोमांच एवं अल्हड़ता से परिपूर्ण है जो पर्यटकों के जिज्ञासा को बढ़ाती है और उन्हें इस क्षेत्र में भ्रमण हेतु आमंत्रित करती है। राजस्थान में विभिन्न धर्मों व जातियों के लोग सभी त्योंहार आपस में मिलजुल कर सौहार्द से मनाते हैं यहां पर दीपावली, होली मुख्य त्योंहार हैं। सिख धर्म के अनुयायी गुरू पर्व जैसे गुरू नानक जयन्ती, गुरू गोविन्दसिंह जयन्ती इत्यादि मनाते हैं।

राजस्थान में पर्यटन के विकास से स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि होती है क्योंकि पर्यटन केन्द्रों में हस्तशिल्पी, कुशल और अकुशल श्रमिक, टैक्सी चालक, व्यपारी, टूर गाईड, टूर ऑपरेटर तथा होटल, लॉज या धर्मशालाओं के कर्मचारी एवं मैनेजर सभी आर्थिक विकास के कार्यों में लगे रहते हैं। प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएं पर्यटन में बहुत महत्व रखती है। जो कि निम्नानुसार है –

सौन्दर्य बोधी प्रभाव – प्राकृतिक सौन्दर्य मनमोहक एवं शीतलता प्रदान करने में सहायक होता है इन दृश्यों के अवलोकन से हमें शांति एवं उल्लास की अनुभूमि होती है इनके आकर्षण के कारण स्थानीय निवासियों को आर्थिक लाभ मिलता है। ये लाभ विदेशी मुद्राओं के रूप में भी होता है। जिसके कारण अर्थव्यवस्था में वृद्धि होती है। देश के पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान क्षेत्र भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का प्रमुख केन्द्र होने के साथ–साथ वीरता, शौर्य, त्याग, कला, लोकजीव और उत्कट देशभक्ति, भावनापूर्ण बलिदानों के फलस्वरूप विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां के प्राचीन शिलालेख, स्मारक, स्तम्भ, मन्दिर एवं भवन उसके समृद्धशाली तथा गौरवपूर्ण अतीत के परचियक हैं। यह क्षेत्र अपनी वीरता, चित्रकला, स्थापत्यकला, वेशभूषा, त्योंहार एवं मेलों, विभिन्न लघु एवं औद्योगिक इकाइयों जैसी नाना विशेषताओं के फलस्वरूप पर्यटन के क्षेत्र में विश्व के मानचित्र अंकित है।

आर्थिक महत्व – पर्यटन क्षेत्र की हस्तकला से सम्बन्धित वस्तुएं पर्यटकों को आकर्षित करती हैं वे इन्हें क्रय करते हैं जिससे शिल्पियों एवं कारीगरों को आर्थिक लाभ होता है। पर्यटक इन वस्तुओं को खरीदते हैं। जिससे अर्थलाभ होता है तथा विदेशी मुद्राएं भी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त वनों से प्राप्त लाख, महुआ, गोंद, शहद अनेक दुर्लभ औषधियों के विक्रय से भी मुद्रा प्राप्ति होती है।

रोजगार पर प्रभाव – राजस्थान में पर्यटन विकास से रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। पर्यटन क्षेत्र के विकास से क्षेत्रों में कई होटल, लॉज एवं धर्मशालाओं का निर्माण किया जा रहा है जो स्थानीय लोगों को बड़ी मात्रा में रोजगार उपलब्ध कराता है। इसके अतिरिक्त टूर गाईड आदि बनकर भी स्थानीय लोग रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। पर्यटन से प्राप्त राजस्व प्रदेश में सामान्य आय का स्तर ऊँचा उठाता है। इसके अतिरिक्त हस्तशिल्प से सम्बन्धित वस्तुओं को बनाकर उन्हें विक्रय कर स्थानीय कलाकार बड़ी मात्रा में आय अर्जित कर रहे पर्यटन विकास का लाभ वित्तीय संस्थाओं, परिवहन उद्योग स्थानीय कलाकारों शिल्पियों तथा श्रमिक वर्ग सभी को मिलता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर प्रभाव – पर्यटन उद्योग विकास से राष्ट्रीय उद्योगों का विकास एवं स्वदेशी तथा स्थानीय हस्तशिल्प एवं सृजनात्मक कलाओं को बढ़ावा मिलता है इसके अतिरिक्त प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक क्षेत्र में प्रगाढ़ता स्थापित करने में, राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय चरित्र के लिए अच्छा वातावरण बनाने में सहयोग मिलता है वर्तमान समय में जितनी आवश्यकता विश्व बंधुत्व और आपसी वैमनस्यता दूर करने की है, उतनी किसी बात की नहीं, आज जब विश्व के लगभग सभी देश परमाणु हथियारों की होड़ में लगे हुए है, ऐसे में पर्यटन उद्योग निश्चित रूप से विश्व शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। क्योंकि पर्यटन के माध्यम से पर्यटक जब एक देश दूसरे देश आते जाते हैं तो वहां की संस्कृति, रहन–सहन, वेशभूषा के बारे में पर्यटकों को जानकारी प्राप्त होती है। जिसके कारण वैश्विक स्तर पर मधुरता एवं प्रेम–भाव की भावना का विकास होता है। इस प्रकार पर्यटन विश्व के सभी देशों के मध्य आपसी सम्बन्ध बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जीवन स्तर में वृद्धि – पर्यटन से समाज में रोजगार के जब अतिरिक्त अवसर पैदा होते हैं तो यह स्वाभाविक ही है कि इसमें लागों के जीवन स्तर में वृद्धि होती है। पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए तो असरकारक होता ही है। साथ में लोगों की जीवन शैली, स्तर वृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे ऐसे समझा जा सकता है कि जब कहीं पर्यटक अधिक आते हैं तो वे जितने दिन भी वहां रहते हैं, स्थानीय लोगों में अपने रहन–सहन से प्रेरणा देते हैं। इस रूप में समाज को प्रेरित करने, उनके जीवनस्तर को ऊँचा उठाने में पर्यटन विषेष रूप से प्रभाव डालता हैं लोगों के जीवनस्तर तथा रहन–सहन की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लाने के देष के एकमात्र सामाजिक उद्देष्य की प्राप्ति के लिए पर्यटन द्वारा अपेक्षित राजस्व एवं आय अर्जित की जा सकती है।

लोक संस्कृति, परम्पराओ का संरक्षण – पर्यटन से निष्चित रूप से लोकपरम्पराओं और संस्कृति का सरंक्षण होता है। पर्यटन के तहत आयोजित किए जाने वाले अधिकांष मेलों, उत्सवों में लोक संस्कृति और परम्पराओं का प्रदर्षन किया जाता है। पर्यटकें की रूचि भी लोक संस्कृति और परम्पराओं में ही अधिक होती है। ऐसे में लोक परम्पराओं और संस्कृति की वर्षों से चली आ रही विरासत को संरक्षण प्रदान करने में पर्यटन सबसे कारगर है।

लोक परम्पराओं, संस्कृति के अंतर्गत लोकनृत्य, गायन, वादन आदि के जरिये पर्यटकों को आकर्षित करने के अंतर्गत ही विभिन्न पर्यटन मेलों, उत्सवों का आयोजन किया जाता है। इनके जरिये ही लोक कलाकारों को संरक्षण मिलता है।

पर्यटन के विकास ने कलाकारों की कला को संरक्षण ही प्रदान नहीं किया बल्कि रोजगार के अवसर भी दिए। आज बड़े बड़े पंच सितारा होटल, मुख्य र्पटन स्थलों या किले महलों आदि में लोक संस्कृति, कलाओ की जो छटा विखरती है उसमें लोक कलाकारों की ही भूमिका होती है।

धरोहर संरक्षण – पर्यटन से पुराने किले, महलों, स्मारकों आदि के संरक्षण की सोच का विकास भी विषेष रूप से हुआ है। पर्यटकों की रूचि पुराने किलों महलों, स्मारकों को देखने की विषेष रूप से होती है। भले ही व्यावसायिक सोच के तहत ही सही, पर्यटन ने धरोहर संरक्षण की सोच को विकसित किया है। समग्र रूप से पर्यटन विरासत को संजोने, धरोहर संरक्षण के जरिये इतिहास को पुनर्जीवित करने का कार्य कर रहा है इससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

पर्यटन के सांस्कृतिक आयाम –

विश्व में मानव अनेक समूहों और समुदायों में बँा है। प्रत्येक मानव समूह के रीति–रिवाज और संस्कार अलग–अलग हैं। सभी अपने ढंग अपने धर्मों, पंथों, त्योहारों, भाषाओं और पारिवारिक आचरणों का पालन करते हैं। इसी विविधता का अध्ययन सांस्कृतिक भूगोल में किया जाता है। यह विविधता ही पर्यटकों को आकर्षित करती है।

मनोरंज हेतु पर्यटन – यह उन पर्यटकों के लिए है जो दूसरी संस्कृति को जानने के साथ ही मनोरंजन की भी कामना करते हैं। उदाहरण के लिए राजस्थान में जहाँ यह विभिन्नता पाई जाती है। यहाँ मार्च के महीने में होली नामक त्योहार अति हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस समय यहाँ का तापमान भी अनुकूल होता है। इसी समय का उपयोग करते हुए हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक यहाँ पहुंच जाते हैं। वे राजस्थान के लोगों के साथ इस रंगों से युक्त त्योहार का आनन्द लेते हैं। इस प्रकार से वे यात्रा के साथ–साथ राजस्थान के सांस्कृतिक रूप से भी परिचित होते हैं। यहाँ यह भी उल्लेख करना आवश्यक होगा कि स्थानीय शासन भी इस समय पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित करता है। भौगोलिक कारक भी पर्यटकों के मनोरंज का कारण बनते हैं। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अनेक राज्यों ने अपनी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करना प्रारम्भ कर दिया है। इस प्रकार की स्थानीय सांस्कृतिक गतिविधियाँ अपनी रोमांचक प्रकृति और विलगता के कारण विश्व भर में पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाती है।

पर्यटन के अनेक आयाम हैं। पर्यटक सांस्कृतिक दूत की भूमिका तो निभाता ही है, साथ ही राज्य की अर्थव्यवस्था में भी महती योगदान देता है। किन्तु अन्य क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र में भी देखने में आया है कि विकसित और विकासशील राष्ट्रों के बीच असमानता व्याप्त है। यदि विकसित देश व राज्य पर्यटन को बढ़ावा देन की दिशा में विकासशील देशों और राज्यों की सहायता करें तो इन असमानताओं को कम कर पूरे देश को प्रजातंत्र, शांति और सद्भावपूर्ण जीवनयापन के लिए सुरक्षित बनाया जा सकता है। इससे इक्कीसवीं सदी में नई वैश्विक सभ्यता का सूत्रपात हो सकेगा। इस सभ्यता का आकलन सिर्फ सकल घरेलू आय के सन्दर्भ में नहीं, अपितु इससे जनित उस जीवन स्तर की गुणवत्ता में मापा जा सकता है, जो मानव जाति के सर्वथा अनुकूल होगा।

पर्यटन की इस समृद्धि का सतत बड़ा कारण यह है कि हमने विकास की अवधारणा को अपनाया। प्राचीनकाल से ही हम इस मान्यता पर चलते रहे – ''हे मातृभूमि, मैं आपको इतना कष्ट न पहुंचाऊं कि जिसकी भरपाई ही न हो सके। मैं आपसे उतना ही लूं जिसकी भरपाई हो सके।'' तेज गति से भूमंडलीकरण की ओर बढ़ रहे विश्व को देखते हुए भारत भी इतिहास और विरासत के परिप्रेक्ष्य में नई पर्यटन नीतियां बना रहा है जिसका सीधा प्रभाव राजस्थान जैसे राज्यों पर भी पड़ रहा है। इस संदर्भ में पुरानी नीति के तहत महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। भारत में पर्यटन उद्योग निरंतर विकास के सोपान तय कर रहा है। आंकड़े इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

इसी प्रकार पर्यटन को बढ़ावा देने में राजस्थान ने भी अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी है और हम विश्व पर्यटन संगठन, विश्व पर्यटन एवं यात्रा परिषद् तथा भू–परिषद को सहयोग देने के लिए वचनबद्ध हैं। इस दिशा में राजस्थान के योगदान को भी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना भी मिलती रही है। पर्यटन के क्षेत्र में राष्ट्र मे संतुलित, दायित्वपूर्ण और सतत विकास के लिए राजस्थान को सभी ओर से सम्मान मिला है। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजस्थान ने अनेक नए कदम उठाए हैं। इनमें एक कदम है सार्वजनिक और निजी भागीदारी। नागरिक विमानन के क्षेत्र में भी हमने ''मुक्ताकाशी नीति'' अपनायी है। सभी हवाई अड्डों को उच्च स्तर का बनाने की प्रक्रिया भी चल रही है। राजस्थान में आने वाले विदेशी व देशी पर्यटकों के आंकड़ों पर दृष्टिपात करें तो यह निरन्तर बढ़ा है। सन् 1971 में देशी व विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या 9,23,194; सन् 1981 में 28,20,847; 1991 में 47,95,007; 2001 में 83,65,500; 2011 में 2,84,89,297 रही। इसी प्रकार सन् 2017 में 4,75,26,536 पर्यटकों ने राजस्थान में पर्यटन के उद्देश्य से यात्रा की। 2018 और 2019 में यह संख्या क्रमशः 5,19,89,991 एवं 5,38,25,991 रही।[10] ये आंकड़ें राजस्थान में पर्यटन के अभूतपूर्व विकास को दर्शाते हैं।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय राजमार्गों की विकास परियोजना के अन्तर्गत 5952 किलामीटर लम्बे मार्ग द्वारा दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई तथा कोलकाता को स्वर्णिम चतुर्भुज के जरिये जोड़ा है। इसी प्रकार 7300 किलोमीटर लम्बे मार्ग द्वारा उत्तर–दक्षिण और पूर्व–पश्चिम गलियारे को जोड़ने के उद्देश्य से एक और राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजना का काम शुरू हो गया है। इन ढांचागत सुविधाओं के विकास से यात्रा एवं पर्यटन को बढ़ावा मिलने की संभावना है।

हमने अपनी नई पर्यटन नीति के तहत स्वदेशी पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन पर बल दिया है, जिससे सामाजिक और आर्थिक विकास में तो मदद मिलेगी ही साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। यह अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन की रीढ़ के रूप में भी कारगर सिद्ध हो सकता है। राजस्थान सरकार भी यहाँ के तीर्थस्थलों पर ध्यान केन्द्रित कर रही है।

पर्यटन विकास के लिए राजस्थान की कुछ विशेषताओं को प्रचारित करना बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकता है, इसी दृष्टि से योग, सिद्धि, आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों को विशेष महत्व दिया है। प्रयास यह हो कि राजस्थान आने वाले पर्यटक राजस्थान का उसकी सम्पूर्णता का दर्शन कर सके।

गति को 'जीवन' तथा ठहराव को 'मृत्यु' का प्रतीक मानने वाली राजस्थानी संस्कृति में गति से उत्पन्न पर्यटन को स्वाभाविक रूप से प्रशंसनीय माना जाता है। वैसे भी 'पधारो म्हारे देस' का उद्घोष करने वाला वाला राजस्थान प्रदेश बाहरी पर्यटकों के पल–पांवड़े बिछाए आवभगत को प्रस्तुत करता है। वैचारिक अवगाहन से पर्यटन का सबसे गुणात्मक प्रभाव सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र में परिलक्षित होता है। आज विदेशी पर्यटन राजस्थान में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना के संवाहक की भूमिका का निर्वहन कर रहा है। नीदरलैण्ड की गैर सरकारी संस्था फिलेरो–डि–ल्यूटो पर्यटकों के मन से उद्भूत एक ऐसी समस्या है जो शिक्षित, धनाढ्य तथा सेवाभावी विदेशियों की मदद से पर्यटन केन्द्रों तथा आसपास के अभावग्रस्त बच्चों की शिक्षा तथा सामान्य विकास का प्रबंध करती है। इसी प्रकार अमरीका की रिलीफ राइडर्स इंटरनेशनल संस्था के घुड़सवार दल राजस्थान के गांव–गांव जाकर शैक्षिक सामग्रियों और बकरियों का वितरण से लेकर चिकित्सा शिविरों का आयोजन करके मानव सेवा का अद्भूत मिसाल प्रस्तुत करते हैं। शैक्षिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान की तो महत्वपूर्ण धूरी है पर्यटन।[11]

राजस्थान पर्यटन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। राजस्थान, भारत के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है। भारत आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है। इसकी खास वजह यहाँ के आकर्षक पर्यटक स्थलों के अतिरिक्त 'अतिथि देवो भवः' की संस्कृति है। वैश्वीकरण के इस युग में अब परम्परागत पर्यटन के स्थान पर नए उभरते हुए आयामों के अन्तर्गत भी राजस्थान की पहचान देश–विदेश में होने लगी है। परम्परागत की बजाय अब जिस नये पर्यटन ने यहाँ आकार लेना आरम्भ किया है, उससे राजस्थान विश्व पर्यटन के मानचित्र पर भी उभरा है। अतः यह आवश्यक है कि राजस्थान को भारत के पर्यटन के नक्शे पर स्थान दिलवाकर इसे ओर अधिक समृद्ध बनाने में योगदान दिया जाए।

संदर्भ :

1 व्यास, राजेष कुमार : पर्यटन उद्भव एवं विकास, रास्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019, पृ. 70

2 यादव, अंजनी, पोपुलेषन एनवायरमेण्ट एण्ड डेवलमेण्ट, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, जौनपुर, 2001, पृ. 20

3 योजना मासिक पत्रिका, मई 2010, प्रतिभा, पर्यटन के सामाजिक सांस्कृतिक आयाम, पृ. 20

4 वही

5 शर्मा, एस. के. एवं सिंह, आर. पी., पर्यटन भूगोल, नई दिल्ली, 2002, पृ. सं. 235

6 व्यास, राजेष कुमार, पूर्वोक्त, पृ. 74

7 सिन्हा, पुष्पा, भारत एवं विश्व के महान दिवस, प्रभात प्रकाशन, 2013, नई दिल्ली, पृ. 69

8 शर्मा, एस. के. एवं सिंह, आर. पी., पूर्वोक्त, पृ. सं. 244–45

9 गुर्जर, नरेष राम, ज्योग्राफी ऑफ ट्यूरिज्म एण्ड रिक्रेएषन, नई दिल्ली, 2003, पृ. 240–41

10 प्रगति प्रतिवेदन, 2020–21, पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार, परिशिष्ट प्ट, पृ. 46

11 योजना, मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, मई 2010,